International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
February 2026 14(2SCE)
समकालीन कला, साहित्य, संगीत एवं नृत्य का विज्ञान एवं समाज विज्ञान से अंतर्संबंध
www.granthaalayah.com

Original Article

THE ROLE OF FOLK AND TRIBAL ELEMENTS IN CONTEMPORARY INDIAN ART: AN ANALYTICAL STUDY

समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय तत्वो की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Sandhya Jadon [1], **Dr. Ashish Kumar Shringi** [2]
[1] Research Scholar, Department of Painting, Government College, Bundi, Kota University, Kota, India
[2] Research Director, Assistant Professor, (Painting Department), Government College, Bundi, India

ABSTRACT

English: The role of folk and tribal elements in contemporary Indian art has been extremely important and significant. Amidst the rapid influences of modernity, globalization, and technological advancements, Indian artists have maintained a connection to their cultural roots. Folk and tribal arts are expressions of the lifestyle, beliefs, traditions, relationship with nature, and collective consciousness of Indian society. Contemporary artists are drawing inspiration from these traditional art forms and presenting them with new ideas, modern mediums, and contemporary contexts, thereby giving Indian art a unique identity.

This study presents an analysis of the form, application, and socio-cultural significance of folk and tribal elements in contemporary Indian art. Contemporary artists have incorporated the colors, lines, symbols, and narratives of folk and tribal art forms such as Gond, Bhil, Warli, and Madhubani into their works with new meanings and perspectives.

The incorporation of folk and tribal elements in contemporary Indian art makes it more sensitive, vibrant, and connected to society. This trend establishes a balance between tradition and modernity and proves instrumental in maintaining cultural continuity. At the same time, it highlights the originality and distinctiveness of Indian art on the global stage.

Therefore, it can be said that folk and tribal elements not only enrich contemporary Indian art aesthetically, but also serve as a powerful medium for social consciousness, cultural preservation, and creative innovation.

Hindi: समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय तत्वो की भूमिका अत्यंत महत्पूर्ण और अर्थपूर्ण रही है। आधुनिक, वैश्वीकरण तथा तकनीकी विकास के तीव्र प्रभावों के बीच भारतीय कलाकारों ने अपनी सांस्कृतिक जडों से जुडाव बनाए रखा है। लोक एवं जनजातीय कलाएँ भारतीय समाज की जीवन-शैली, विश्वासो, परंपराओं, प्रकृति-संबंध और सामूहिक चेतना की अमभव्यक्ति हैं। समकालीन कलाकार इन परंपरागत कलारूपों से लेकर उन्हें नए विचारों, आधुनिक माध्यमों और समकालीन संदभों के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे भारतीय कला को एक पहचान प्राप्त होती है।

यह अध्ययन समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय तथ्यों के स्वरूप, उनके प्रयोग और उनके सामाजिक दृ सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। गोंड, भील, वारली, मधुबनी जैसी लोक एवं जनजातीय कलाओं के रंग, रेखा, प्रतीक और कथ्य को समकालीन कलाकारों ने अपनी रचनाओं में नए अर्थ और दृष्टिकोण के साथ अपनाया है।

*Corresponding Author:
Email address: Sandhya Jadon (sandhyajadon1998@gmail.com)

Received: 30 December 2025; **Accepted:** 24 January 2026; **Published** 28 February 2026
DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6735
Page Number: 304-308
Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah
Online ISSN: 2350-0530, **Print ISSN:** 2394-3629
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय तथ्यों का समावेश कला को अधिक संवेदनशील, जीवंत और समाज से जुडा हुआ बनाता है। यह प्रवृति परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करती है तथा सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में सहायक सिद्ध होती है। साथ ही, यह वैश्विक मंच पर भारतीय कला की मौलिकता और विशिष्टता को रेखांकित करती है।

अतः यह कहा जा सकता है लोक एवं जनजातीय तत्व समकालीन भारतीय कला को केवल सौंदयाणत्मक सम्द्री ही नहीं प्रदान करते, बक्ति सामामजक चेतना, सांस्कृमतक संरक्ष और रचनात्मक नवाचार का सशि माध्यम भी बनते है।

Keywords: Contemporary Art, Folk Art, Tribal Art, Indian Painting, Cultural Consciousness, समकालीन कला, लोक कला, जनजातीय कला, भारतीय चित्रकला, सांस्कृतिक चेतना

प्रस्तावना

भारतीय कला का इतिहास मानव सभ्यता के विकास के साथ निरंतर विकसित होता रहा है। प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों से लेकर आधुनिक डिजिटल कला तक भारतीय कला की यात्रा विविध चरणों से होकर गुजरी है। इस दीर्घ परंपरा में लोक एवं जनजातीय कला की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ये कलाएँ न केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति हैं, बल्कि सामाजिक संरचना, धार्मिक आस्था, प्रकृति प्रेम एवं सामूहिक चेतना का सशक्त माध्यम भी हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जब भारत में आधुनिकता का प्रभाव बढ़ा, तब भारतीय कलाकारों के समक्ष यह चुनौती उपस्थित हुई कि वे पश्चिमी कला प्रभावों को आत्मसात करते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान को कैसे सुरक्षित रखें। इसी संदर्भ में लोक एवं जनजातीय कला समकालीन भारतीय कला के लिए प्रेरणा का प्रमुख स्रोत बनी।

समकालीन भारतीय कला केवल रूपात्मक प्रयोगों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रश्नों से भी जुड़ी हुई है। लोक और जनजातीय तत्व इन सभी आयामों को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।

शोध की उद्देश्य : शोध का मुख्य उद्देश्य समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय तत्वों की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। भारतीय कला परंपरा की जड़ें लोकजीवन और जनजातीय संस्कृति में गहराई से समाहित रही हैं, जिन्होंने सदैव कला को सांस्कृतिक एवं भावनात्मक आधार प्रदान किया है। आधुनिक समय में, जब कला वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और नवीन वैचारिक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो रही है, तब लोक एवं जनजातीय कला के महत्व को पुनः समझना आवश्यक हो गया है। यह शोध इस दृष्टि से यह जानने का प्रयास करता है कि समकालीन भारतीय कलाकार किस प्रकार इन पारंपरिक तत्वों को अपनी रचनाओं में समाहित कर रहे हैं।

इस अध्ययन का एक प्रमुख उद्देश्य लोक एवं जनजातीय कला की विशेषताओंकृजैसे प्रतीकात्मकता, सरलता, प्रकृति से जुड़ाव, रंगों की सजीवता तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तिकृको समझना है और यह विश्लेषण करना है कि ये तत्व आधुनिक कला को किस प्रकार समृद्ध बनाते हैं। साथ ही, यह शोध आधुनिक कलाकारों द्वारा लोक एवं जनजातीय रूपों के रचनात्मक प्रयोग का अध्ययन करता है, जिससे भारतीय कला को एक विशिष्ट पहचान प्राप्त हुई है।

इसके अतिरिक्त, इस शोध का उद्देश्य सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में लोक एवं जनजातीय कला की भूमिका का मूल्यांकन करना है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि समकालीन कला में इन तत्वों की उपस्थिति भारतीय सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान देती है तथा वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता को सिद्ध करती है।

शोध-प्रविधि प्रस्तुत शोध में गुणात्मक शोध-पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन हेतु द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोध-पत्रों, जर्नलों तथा कला-समीक्षाओं का गहन अध्ययन किया गया। साथ ही समकालीन भारतीय कलाकारों की कृतियों का दृश्यात्मक विश्लेषण कर लोक एवं जनजातीय तत्वों की पहचान की गई। शोध में ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। संपूर्ण अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है।

लोक कला: अवधारणा एवं स्वरूप

- **लोक कला की परिभाषा :** लोक कला वह कला है जो सामान्य जनजीवन से उत्पन्न होती है तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी परंपरागत रूप से हस्तांतरित होती रहती है। यह कला किसी औपचारिक प्रशिक्षण पर आधारित न होकर अनुभव, आस्था और सामूहिक चेतना का परिणाम होती है।
- **लोक कला की प्रमुख विशेषताएँ :** सरल एवं सहज अभिव्यक्ति, धार्मिक, पौराणिक एवं सांस्कृतिक विषय, प्राकृतिक रंगों का प्रयोग, प्रतीकात्मकता, सामूहिक सृजन की भावना, परंपरा से गहरा जुड़ाव
- **भारतीय लोक कला के प्रमुख रूप :** भारत में लोक कला की विविध शैलियाँ पाई जाती हैं, जिनमें प्रमुख हैंकृ मधुबनी चित्रकला (बिहार), वारली चित्रकला (महाराष्ट्र),फड़ चित्रकला (राजस्थान),पिथोरा चित्रकला (मध्य प्रदेश), कलमकारी (आंध्र प्रदेश), पटचित्र (ओडिशा व बंगाल) ये सभी कलाएँ भारतीय जनजीवन की संवेदनाओं को कलात्मक रूप प्रदान करती हैं।

जनजातीय कला: अवधारणा एवं स्वरूप

- **जनजातीय कला का परिचय :** जनजातीय कला आदिवासी समुदायों की जीवनशैली, धार्मिक विश्वासों, प्रकृति से संबंध तथा सामाजिक संरचना को व्यक्त करती है। यह कला शहरी प्रभावों से अपेक्षाकृत मुक्त होती है और प्रकृति के अत्यंत समीप रहती है।
- **जनजातीय कला की विशेषताएँ :** प्रकृति-पूजा एवं आत्मा-विश्वास, ज्यामितीय आकृतियों का प्रयोग, जीव-जंतुओं एवं वृक्षों का चित्रण, कथात्मक शैली, सीमित किंतु प्रभावी रंग योजना
- **प्रमुख जनजातीय कलाएँ :** गोंड चित्रकलारू गोंड कलाकारों की कला-दृष्टि प्रकृति, मिथक और सामुदायिक जीवन से गहराई से जुड़ी है। जतारा, धुमली और भुजिया जैसे कलाकारों ने इसे समकालीन मंच पर स्थापित किया। उनकी कला केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन और सांस्कृतिक स्मृति है।

समकालीन गोंड चित्र लोक कथाएँ, प्राकृतिक तत्व और ग्रामीण जीवन प्रदर्शित करते हैं। आधुनिक जीवन की जटिलताओं, पर्यावरणीय संकट और वैश्विक प्रभावों को समाहित कर यह कला पारंपरिक और समकालीन चेतना का संवाद प्रस्तुत करती है।

- **वारली जनजातीय शैली :** वारली चित्रकला अपनी सरल, ज्यामितीय आकृतियों और न्यूनतम संरचना के लिए प्रसिद्ध है। वृत्त, त्रिभुज और रेखाओं से निर्मित मानव आकृतियाँ, नृत्य, कृषि और दैनिक जीवन इसके प्रमुख विषय हैं। समकालीन कलाकार इस सादगी और प्रतीकात्मकता को नए संदर्भों में प्रयोग कर सामाजिक संरचनाओं, शहरीकरण और पर्यावरणीय संकट जैसे विषयों पर टिप्पणी करते हैं। प्रकृति और मानव के सहअस्तित्व को दर्शाते हुए वारली कला पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी देती है। इस प्रकार, गोंड और वारली कला केवल प्रेरणा नहीं, बल्कि समकालीन भारतीय कला में वैचारिक और सृजनात्मक आधार बनती हैं। भील चित्रकला,संथाल कला, सोहराई कला आदि है।

भारतीय कला का ऐतिहासिक विकास

भारतीय कला का ऐतिहासिक विकास एक दीर्घकालिक और बहुस्तरीय प्रक्रिया रही है, जिसमें प्राचीन शिल्प परंपराएँ, धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण, क्षेत्रीय शैलियाँ तथा लोक जीवन की अभिव्यक्तियाँ समान रूप से समाहित रही हैं। सिंधु सभ्यता की मूर्तिकला से लेकर मौर्य, गुप्त और मध्यकालीन मंदिर स्थापत्य तक भारतीय कला ने सौंदर्य, प्रतीकात्मकता और आध्यात्मिकता का एक विशिष्ट स्वरूप विकसित किया। मंदिरों की शिल्पाकृतियाँ, भित्ति चित्रण, राजस्थानी एवं मुगल चित्रकला परंपराएँ न केवल शासक वर्ग की रुचियों को प्रतिबिंबित करती हैं, बल्कि लोक जीवन, धार्मिक कथाओं और सामाजिक संरचनाओं को भी दृश्य रूप प्रदान करती हैं।

लोक कला भारतीय कला परंपरा का वह आधार है, जिसने शास्त्रीय और दरबारी कलाओं के समानांतर जनसामान्य की सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त किया। ग्रामीण और जनजातीय समाजों में विकसित कला रूपों ने स्थानीय जीवन, प्रकृति और सामाजिक अनुष्ठानों को निरंतर संरक्षित किया। इस प्रकार, भारतीय कला का ऐतिहासिक विकास केवल अभिजात्य या शास्त्रीय परंपराओं तक सीमित न होकर एक व्यापक सांस्कृतिक संवाद का परिणाम रहा है।

औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय कला एक वैचारिक संकट से गुजरी। पश्चिमी अकादमिक कला शिक्षा और यथार्थवादी दृष्टिकोण के प्रभाव ने पारंपरिक भारतीय कलात्मक मूल्यों को चुनौती दी। इसके प्रत्युत्तर में बंगाल स्कूल जैसे आंदोलनों ने भारतीय कला की आत्मिक और पारंपरिक पहचान को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। किंतु स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय कलाकारों के समक्ष एक नई चुनौती उपस्थित हुईकृएक ऐसी आधुनिक कलात्मक भाषा की खोज, जो न तो केवल पश्चिमी आधुनिकतावाद की अनुकृति हो और न ही अतीत की पुनरावृत्ति, बल्कि परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सृजनात्मक संतुलन स्थापित कर सके।

1950 और 1960 के दशकों से भारतीय समकालीन कला में पश्चिमी आधुनिकतावादी प्रवृत्तियोंकृ जैसे अमूर्तन, अभिव्यक्तिवाद और प्रतीकात्मकताकृका प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। किंतु भारतीय कलाकारों ने इन प्रवृत्तियों को ज्यों-का-त्यों अपनाने के बजाय उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत और दृश्य परंपराओं के साथ समन्वित किया। इस प्रक्रिया में लोक और जनजातीय कला के रूपक, प्रतीक, कथात्मक संरचनाएँ और तत्वमय दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण प्रेरणा स्रोत बने।

समकालीन भारतीय कला: अवधारणा

समकालीन भारतीय कला वह कला है जो वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी परिवर्तनों को अभिव्यक्त करती है। इसमें परंपरा और आधुनिकता का समन्वय स्पष्ट दिखाई देता है। समकालीन कलाकार नई तकनीकों, माध्यमों एवं विचारों को अपनाते हुए भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहते हैं।

समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय तत्वों की उपस्थिति केवल सैद्धांतिक या शैलीगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कलाकारों की दृष्टि, अनुभव और वैचारिक प्रतिबद्धता में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। अनेक समकालीन कलाकारों ने लोक और जनजातीय परंपराओं को अपनी जन्मजात सांस्कृतिक चेतना के रूप में अपनाया है तथा उन्हें आधुनिक कला के वैश्विक विमर्श से जोड़ते हुए एक नई दृश्य भाषा का निर्माण किया है।

समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय तत्वों की भूमिका

समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय परंपराओं का प्रभाव अत्यंत व्यापक और गहन रूप में दृष्टिगोचर होता है। आधुनिक कलाकारों ने पारंपरिक लोक-संस्कृति से प्रेरणा लेकर अपनी कला को न केवल विषयवस्तु की दृष्टि से समृद्ध किया है, बल्कि उसे सांस्कृतिक पहचान भी प्रदान की है। लोक एवं जनजातीय कला से प्राप्त तत्वों ने समकालीन कला को जड़ता से मुक्त कर जीवंतता प्रदान की है।

- **विषय-वस्तु में प्रभाव :** समकालीन कलाकारों ने लोककथाओं, देवी-देवताओं, ग्रामीण जीवन, कृषि-परंपराओं, पशु-पक्षियों तथा प्रकृति से जुड़े विविध प्रसंगों को अपनी रचनाओं का मुख्य विषय बनाया है। ये विषय पारंपरिक होने के बावजूद आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किए गए हैं, जिससे उनमें नवीनता के साथ-साथ सांस्कृतिक गहराई भी दिखाई देती है। ग्रामीण जीवन की सरलता, लोकविश्वासों की आस्था और प्रकृति से जुड़ा भाव आधुनिक कला में संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में उभरता है।
- **रंगों का प्रयोग :** लोक एवं जनजातीय कला में रंगों का विशेष महत्व रहा है। लाल, पीला, नीला, हरा जैसे चटख और प्रतीकात्मक रंग भावनाओं को तीव्रता प्रदान करते हैं। समकालीन कलाकारों ने इन रंगों को आधुनिक संयोजन एवं संतुलन के साथ अपनाया है, जिससे चित्रों में ऊर्जा, लयात्मकता और अभिव्यक्ति की सशक्तता दिखाई देती है।
- **रेखा एवं रूप संरचना :** लोक एवं जनजातीय कला की रेखाएँ सरल, प्रवाही तथा प्रतीकात्मक होती हैं। इन रेखाओं में स्वाभाविकता और सहजता निहित होती है। समकालीन कलाकारों ने इन रेखाओं को आधुनिक शैली में रूपांतरित करते हुए अमूर्त और अर्द्ध-आलंकारिक स्वरूप प्रदान किया है। परिणामस्वरूप चित्रों में पारंपरिकता और आधुनिकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

प्रतीकात्मकतारू समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय प्रतीकों का अत्यंत प्रभावी प्रयोग देखा जाता है। सूर्य, चंद्र, वृक्ष, पशु, देवी-देवता तथा प्रकृति से जुड़े अन्य प्रतीक गहरे अर्थों को व्यक्त करते हैं। ये प्रतीक जीवन, सृजन, शक्ति, आस्था और संतुलन के भाव को प्रकट करते हैं। आधुनिक कलाकार इन प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विचारों को अभिव्यक्त करते हैं, जिससे कला अधिक अर्थपूर्ण और संप्रेषणीय बन जाती है।

शैली एवं तकनीक में प्रभावरू आज लोक और जनजातीय शैलियाँ कैनवास, एक्रेलिक, मिक्स मीडिया, डिजिटल आर्ट आदि में रूपांतरित हो चुकी हैं। पारंपरिक रूपांकन आधुनिक अभिव्यक्ति से जुड़कर नवीन कला-भाषा का निर्माण करता है।

सांस्कृतिक पहचान का संरक्षणरू वैश्वीकरण के दौर में लोक एवं जनजातीय तत्व भारतीय कला की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते हैं। ये तत्व भारतीय कला को पाश्चात्य प्रभावों से अलग विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं।

सामाजिक चेतना की अभिव्यक्तिरू समकालीन कलाकार लोक एवं जनजातीय तत्वों के माध्यम सेकृपर्यावरण संरक्षण,आदिवासी शोषण, सामाजिक विषमता, नारी चेतना जैसे विषयों को सशक्त रूप से प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रमुख समकालीन कलाकार एवं लोक-जनजातीय प्रभाव

- **जगदीश स्वामीनाथन :** उन्होंने जनजातीय कला को आधुनिक कला मंच पर प्रतिष्ठा दिलाई तथा भारत भवन, भोपाल के माध्यम से लोक कलाकारों को वैश्विक पहचान दिलाई।
- **सैयद हैदर रजा :** उनकी अमूर्त कला में भारतीय दर्शन, बिंदु, प्रकृति और लोक प्रतीकों की गहरी छाप दिखाई देती है।
- **जमिनी रॉय :** जमिनी रॉय ने बंगाल की पटचित्र शैली से प्रेरणा लेकर आधुनिक भारतीय कला को स्वदेशी स्वरूप प्रदान किया। उनके चित्रों में सरलता, सपाट रंग और लोक-भावना स्पष्ट दिखाई देती है।
- **एम. एफ. हुसैन :** हुसैन की कृतियों में भारतीय मिथक, लोककथाएँ एवं जनजीवन आधुनिक दृष्टिकोण से चित्रित हैं।
- **जोगेन चैधरी :** इनकी कृतियों में जनजातीय आकृतियों एवं प्रतीकों का गहन प्रभाव दिखाई देता है।
- **जंगढ़ सिंह श्याम :** गोंड कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाले प्रमुख कलाकार। उनकी शैली में प्रकृति, कल्पना और प्रतीकात्मकता का सुंदर समन्वय मिलता है।
- **भूरी बाई :** भील जनजातीय कला की प्रमुख कलाकार, जिन्होंने पारंपरिक शैली को आधुनिक माध्यमों में स्थापित किया।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

आज की समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय कलाओं की प्रासंगिकता केवल सांस्कृतिक धरोहर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और वैश्विक स्तर पर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। ये कलाएँ भारतीय सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम हैं, जो आधुनिक जीवन और वैश्वीकरण के युग में हमारी जड़ों से जोड़ती हैं।

आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा के तहत, लोक एवं जनजातीय कला स्थानीय कारीगरों और समुदायों के लिए आजीविका का प्रमुख साधन बन गई है। पारंपरिक चित्रकला, हस्तशिल्प और सजावटी कलावस्तुएँ न केवल आर्थिक सशक्तिकरण प्रदान करती हैं, बल्कि ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों में रोजगार सृजन और सांस्कृतिक संरक्षण का भी माध्यम बनती हैं।

साथ ही, कला पर्यटन के क्षेत्र में भी इन कलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय लोककला और जनजातीय उत्सव अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पर्यटन उद्योग को मजबूती मिलती है।

वर्तमान डिजिटल युग ने इन कलाओं को वैश्विक पहचान प्रदान की है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और डिजिटल प्रदर्शनी के माध्यम से लोक एवं जनजातीय कलाएँ अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुँच रही हैं। इस प्रकार, समकालीन परिप्रेक्ष्य में ये कलाएँ सांस्कृतिक, आर्थिक और वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक और बहुआयामी महत्व रखती हैं।

चुनौतियाँ

व्यावसायीकरण से मौलिकता का ह्रास, कलाकारों का आर्थिक शोषण, नई पीढ़ी की घटती रुचि, संरक्षण एवं प्रलेखन की कमी।

सुझा

लोक व जनजातीय कला को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए, कलाकारों को सरकारी संरक्षण एवं अनुदान मिले, डिजिटल आर्काइव विकसित किए जाएँ, शोध एवं प्रलेखन को प्रोत्साहन दिया जाए।

उपसंहार

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समकालीन भारतीय कला में लोक एवं जनजातीय तत्वों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य है। ये तत्व भारतीय कला को न केवल उसकी जड़ों से जोड़ते हैं, बल्कि उसे वैश्विक मंच पर विशिष्ट पहचान भी प्रदान करते हैं। समकालीन कलाकारों द्वारा इन परंपराओं का नवीन रूपों में प्रयोग यह सिद्ध करता है कि भारतीय कला जीवंत, सृजनशील एवं समयानुकूल है। यदि इन कलाओं का संरक्षण, संवर्धन एवं समुचित प्रचार किया जाए, तो यह भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रखने में सहायक सिद्ध होंगी।

REFERENCES

Chandra, A. (2021). Symbolism in Folk and Tribal Arts (लोक एवं जनजातीय कलाओं में प्रतीकात्मकता). Art and Society, 6.

Chaudhary, J. (2018). Folk Inspiration in Contemporary Indian Painting (समकालीन भारतीय चित्रकला में लोक प्रेरणा). Mumbai: Art House.

Gupta, R. (2018). History and Contemporary Experiments of Madhubani Art (मधुबनी कला का इतिहास और समकालीन प्रयोग). Patna: Bihar Publication.

Husain, M. F. (2017). Indian Myth and Modern Painting (भारतीय मिथक और आधुनिक चित्रकला). Mumbai: HarperCollins.

Mehra, K. (2020). Preservation of Handicrafts and Tribal Art (हस्तशिल्प और जनजातीय कला का संरक्षण). New Delhi: Sanskrit Prakashan.

Roy, J. (2015). Folk Painting of Bengal and Modernity (बंगाल की लोकचित्रकला और आधुनिकता). Kolkata: Kala Sanskriti Publication.

Sharma, R. (2020). Folk Influence in Contemporary Indian Art (समकालीन भारतीय कला में लोक प्रभाव). Kala Vimars, 12.

Shukla, V. (2019). Warli Painting: A Social and Cultural Perspective (वारली चित्रकला: सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि). Lok Kala Journal, 5.

Singh, K. (2019). Folk and Tribal Influence in Modern Indian Art (भारतीय आधुनिक कला में लोक और जनजातीय प्रभाव). Indian Art Studies Journal, 8, 21–39.

Tiwari, S. (2019). Indian Folk and Tribal Art: Tradition and Modernity (भारतीय लोक एवं जनजातीय कला: परंपरा और आधुनिकता). Lucknow: Gyanadeep Prakashan.

Tribal Art Special Issue. (2016). Janajatiya Kala Visheshank (जनजातीय कला विशेषांक). Bhopal: Bharat Bhavan Publication.

Tyagi, A. (2016). Tribal Arts of Central India (मध्य भारत की जनजातीय कलाएँ). Bhopal: Madhya Bharat Publication.

Verma, S. (2012). Tribal Art and Culture (जनजातीय कला एवं संस्कृति). Allahabad: Sahitya Bhavan.